ISSN - 2231-1130
वर्ष–षष्ठम् ; सितम्बर–2015

बीमारी एवं स्वास्थ्य : भोटिया जनजाति की पारम्परिक से आधुनिकता की स्वीकार्यता

ओमप्रकाश*

नृजातियों में विभिन्न समाज उनकी संस्कृति, रहन–सहन, भाषा–बोली, आचार–विचार आदि समाजों के बीच भिन्नता दर्शाता है। विचार है कि विकास की मुख्यधारा से हटकर जीवन यापन करने वाले जन समूह जनजातियों धारा के माने जाते हैं इन्हीं में भोटिया की जनजाति की बीमारी के बारे में उनकी अवधारणा व इसके आचार में अपनायी जाने वाली पारम्परिक व आधुनिक चिकित्सा पद्धति। इनके बारे में जब गहन शोध को अपनाया गया इनके विचारों को जानने समझने की कोशिश की गयी तो यह आसान नहीं था क्योंकि ये अपनी निजता किसी पर जाहिर नहीं करते क्योंकि वस्तुतः पहाड़ी पृष्ठभूमि से सम्बन्ध रखने वाली यह जनजाति अन्तर्मुखी होती है। प्रत्येक समाज में आचार–विचार का कुछ खुला तथा कुछ बन्द पहलू होता है। अतः विश्वास एक बन्द पहलू है। इनका बीमारी के बारे में विश्वास है कि जादू, भूत–प्रेत, अलौकिक शक्ति, देवी–देवताओं की अप्रसन्नता आदि के कारण आती है और इसको ओझा–पण्डित, जादूगर द्वारा अनुष्ठानिक क्रिया करके ठीक किया जाता है। इसमें पूजा, बलि (जिसमें अधिकांशतः भेड व भैंस आदि) देने से आत्मा शान्त होकर सहायता प्रदान करती हैं। झांड–फूँक, टोना–टोटका, बुरी नजर उतारना जैसे बच्चों की बीमारी का इलाज करने के लिए अपनायी जाने वाली उपचार पद्धति है। लौकिक व अलौकिक में विश्वास करने की पारम्परिक सोच का आधुनिकता के साथ विवाद व मानसिक तनाव पैदा करता है परन्तु समाज में व्याप्त विश्वास जो धीरे–धीरे समाजीकरण व विकास (शारीरिक व बौद्धिक) के साथ जीवन में सोच व क्रिया–कलाप में जो कि स्थान बनाता है उसे वृत्ति को तोड़ना मुश्किल काम है। जनजातियों के

* शोध–छात्र, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

दुर्गम स्थानों पर निवास के कारण उपलब्ध संसाधनों से ही अपने जीवन की रक्षा करना जरूरी था जिसने एक विधान व पारम्परिकता को जन्म दिया। आवश्यकतायें नये विधान खोजने के लिए मजबूर करती है और धीरे–धीरे वही वृत्ति पहचान व परम्परा का रूप धाण करती है। जड़ी–बूटियों से इलाज लगभग सभी प्राचीन समाजों का अंग रहा है। झाड़–फूंक, ओझा–गुनिया, देवी–देवताओं की पूजा, बलि की प्रथायें यहाँ मौजूद हैं जो कभी सभ्य समाज (जो आज विकास की मुख्य धारा में हैं) में भी मौजूद थीं। भोटिया लोग पारम्परिक सामाजिक व्यवस्था में गुंधे हुए हैं लेकिन शिक्षा, यात्रा, व्यापार–रोजगार के कारण बाहरी लोगों से सम्पर्क के कारण आधुनिकता का विचार अपनाने लगे हैं और सरकारी योजनाओं जिसमें मुख्यतः स्वास्थ्य के लिए उठाये गये कदमों और अभियान में हिस्सेदारी करने लगे हैं। अंग्रेज़ी दवाओं का इस्तेमाल करने लगे हैं। पूछने पर बताते हैं कि जड़ी–बूटियों का इलाज कारगर तो है लेकिन इनकी पहचान और इनको उपयोग में लाने के लिए की जाने वाली मेहनत के कारण आसान नहीं है इसलिए लोग इस पद्धति से बच रहे हैं। मेडिकल स्टोर, स्थानीय अंग्रेजी दवाओं के डॉक्टर, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में अपना इलाज कराना अब इनको ज्यादा सुविधा जनक लगने लगा है। क्षेत्रीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर सुबह से शाम तक बीमारी के कारण इलाज के लिए लोगों की भीड़ यह इंगित करती है कि लोग आधुनिक चिकित्सा पद्धति को अपनाने लगे हैं। लोगों का विचार है कि योग्य चिकित्सक द्वारा दी जाने वाली दवाएं बहुत सारी परेशानियों से मुक्ति दिलाती हैं। विचारों के बदलने से जीवन में जरूरतों की विधियाँ बदलती हैं। नयी पद्धतियाँ अपनायी जाती हैं। इन लोगों ने निश्चय ही आधुनिक चिकित्सा पद्धति के मूल्य को महत्त्व देना शुरू किया है।

आधुनिक चिकित्सा पद्धति एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जो तकनीकी शिक्षा, ज्ञान, रसायन और मशीनों पर आधारित है। इस पद्धति में इस्तेमाल की जाने वाली दवाइयाँ पूर्णतया मानव निर्मित होती हैं व मरीज को

सीधे तौर पर लाभ पहुँचाती हैं। लेकिन जो समाज प्राचीन काल से इस पद्धति से अनभिज्ञ रहा है, इसके प्रति सशंकित रहता है। भोटिया जनजाति दुर्गम स्थानों पर रहने वाला पारम्परिक समाज है जहाँ पर हमेशा से अपने जीवन को बचाये रखने के लिए पारम्परिक ज्ञान का इस्तेमाल किया जाता रहा है। लेकिन धीरे–धीरे उन समाजों का शिक्षा, सड़क, रेल यात्रा के माध्यम से आधुनिक कहे जाने वाले समाज से सम्पर्क के कारण अद्यतन विचारों व तकनीक का इस्तेमाल होने लगा हैं। सरकारी योजनाएं इन तक पहुँचायी जा रही हैं। गाँव नहीं तो विकास खण्ड स्तर पर अस्पताल, कृषि केन्द्र, योजना केन्द्र की स्थापना करके इनको लाभ पहुँचाने की कोशिश की गयी है। इनके यहाँ दवाओं से होने वाले लाभ का प्रचार–प्रसार किया गया है। इस काम में इन्हीं के गाँवों के शिक्षित युवाओं का सहयोग लिया गया।

धीरे–धीरे प्रचार–प्रसार बढ़ा तो लोगों ने इस ओर ध्यान देना शुरू किया। गाँवों के स्तर पर डॉक्टर व चिकित्सालय की व्यवस्था नहीं दी जा सकी है क्योंकि जनसंख्या घनत्व का कम होना तथा छोटे–छोटे गाँवों का होना है। सड़क मार्ग से केवल विकास खण्डों को ही जोड़ा जा सका है। गाँवों को जे0 आर0 वाई0 की सीमेन्ट की पगडण्डियों व सीढ़ियों से ही जोड़ा जा सका है। अब से कुछ वर्ष पहले तक भोटिया जनजाति के ये गाँव पारम्परिक चिकित्सा पद्धति के ज्ञान का इस्तेमाल अपनी बीमारी के इलाज के लिए करते थे। धन अभाव के कारण ये चिकित्सा सुविधा लेने से हिचकते थे जो इन्हें मृत्यु के मुँह में ढकेल देती थी। दयनीय दशा से ग्रसित ये समाज इलाज के लिए केवल जड़ी–बूटी, तन्त्रमंत्र, जादू, झाँड–फूंक आदि पर ही आधारित था। लेकिन अभी इनको आधुनिक चिकित्सा सुविधा सरकार की तरफ से उपलब्ध है। डॉक्टर नियमित रूप से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर मौजूद रहता है। प्रसव के लिए महिलाओं को अस्पताल ले जाते हैं जहां नर्स व महिला डाक्टर, कम्पाउण्डर आदि की सेवा उपलब्ध हो जाती है। सरकारी योजनाओं के तहत बीसी0 जी0, डी0 पी0 टी0, हेपेटाइटिस आदि के टीके बच्चों को

नियमित रूप से लगाये जाते हैं। कार्ड भी बनाया जाता है। वनज व स्वास्थ्य की जांच भी की जाती हैं। पोलियों की दवा ''राष्ट्रीय पोलियो उन्मूलन अभियान'' के तहत पिलायी जाती है। यहाँ अभी तक कोई व्यक्ति पोलियो रोग से पीड़ित नहीं है। आपातकालीन रात्रि सेवा मिलती है लेकिन घर पर नहीं अस्पताल जाना पड़ता है। यदि कोई व्यक्ति को गम्भीर बीमारी है तो प्राथमिक इलाज के बाद शहर के किसी अस्पताल को रेफर कर दिया जाता है। कभी–कभी आर्थिक स्थिति ठीक न होने की दशा में ये झाँड–फूंक, तन्त्रमन्त्र, बलि आदि आनुष्ठानिक क्रिया का सहारा लेते हैं। कभी–कभी लाभ हो भी जाता है लेकिन अधिकांश रोगी की मृत्यु भी हो जाती है। महिलाओं के लिए अस्पताल को यहां ज्यादा उपयुक्त माना जा रहा है। शिक्षा का प्रसार होने पर इन सब में जागरूकता आयी है, अब ये घर पर प्रसव नहीं करवाते हैं। अस्पताल जाना ज्यादा लाभप्रद माना जा रहा है। हड्ड़ी टूटने पर पहले केवल स्थानीय ज्ञान व इलाज की पद्धति अपनायी जाती थी लेकिन अब अस्पताल जाकर प्लास्टर, आपरेशन आदि करवाते हैं, चाहे यह अन्तिम विकल्प के रूप में ही क्यों न हो। जब भी बीमार होते हैं तो एक स्वास्थ्य विकल्प के रूप में दवाइयों का लाभ लेते हैं।

जड़ी–बूटियां किसी भी मर्ज में लाभ पहुंचाती हैं लेकिन इसको उपयोग लायक बनाने में जो श्रम लगता है और सही पहचान न हो पाने के कारण ये इसको द्वितीय विकल्प के तौर पर देखने लगे हैं। भोटिया जनजाति की पचास वर्ष से ऊपर की उम्र के लोग ज्यादा अस्पताल नहीं जाते हैं। शिक्षित व युवा उम्र के लोगों में अधिकांश अस्पताल ही जाते हैं। पूछने पर बताते हैं कि डॉक्टर जांच कर पता लगा सकते हैं कि बीमारी की वजह क्या है उसी के अनुरूप दवा देते हैं और जल्दी लाभ मिलता है, मेडिकल स्टोर भी अस्पताल के आस–पास खुल गये हैं। कुछ मरीज यही दुकान से सीधे दवा खरीद लेते हैं। यहां स्थानीय स्तर पर झोला छाप डॉक्टर नहीं हैं। लगभग सभी ने कभी न कभी अंग्रेजी दवाओं का इस्तेमाल किया है। एक व्यक्ति

नानासेम सरमौली गाँव के हैं, नाम भाल सिद्ध है, बताते हैं कि इन्होंने कभी अंग्रेजी दवा का इस्तेमाल नहीं किया है न ही बाजार की कोई खाद्य वस्तु का प्रयोग किया है। अभी तक गैरसरकारी संगठन यहां तक कभी नहीं आया। स्वास्थ्य जागरूकता के लिए पोलियो दवा पिलाने वाले लोग आते हैं। अभी पानी सम्बन्धी बीमारी यहां नहीं है। लोग बताते हैं कि सीधे बर्फ गलकर पानी आता है। पहाड़ों में पतले पतले दर्रे बने हुए हैं। इन्हीं के माध्यम से निरन्तर पानी गिरता रहता है। सरकारी योजना के तहत पाइप लाइन बिछाई गयी है और इन्हीं झरनों से जोड़ी गयी है जो लोगों तक पानी पहुँचाती है। पतली–पतली सीमेन्ट की नहरें बनाई गयी हैं जो इनके खेतों तक पानी पहुंचाती हैं। पानी का इस्तेमाल ये सीधे झरनों से कपड़ा धोने के लिए, नहाने के लिए करते हैं। भोटिया लोग जो इन तीनों गाँवों नानासेम सरमौली, दरकोट, हरकोट में रहते हैं प्रत्येक दिन स्नान नहीं करते क्योंकि यहां ठण्ड बहुत रहती है। मौसम साफ व धूल रहित होता है। धार्मिक कारणों से कुछ लोग रोज स्नान करते हैं। किसी विशेष सामाजिक पर्व पर सभी स्नान करते हैं। साबुन व डिटरजेन्ट का प्रयोग करने लगे हैं लेकिन इनकी संख्या ज्यादा नहीं है। नहाने व बाल साफ करने के लिए स्थानीय जड़ी–बूटी का इस्तेमाल करते हैं।

अस्तु आधुनिक सोच व शिक्षा की पहुँच ने लोगों को जागरूक किया है तथा लोगों को पारस्परिकता व रूढ़िवादिता से धीरे–धीरे मुक्ति मिल रही है। भोटिया लोगों की बस्तियों को सुगम बनाकर आधुनिक समाज व विचारधारा से जोड़कर इन्हें जागरूक किया गया है। मिश्रित चिकित्सा पद्धति ही सही पर आधुनिक चिकित्सा पद्धति के बारे में भोटिया जनजाति जागरूक हो गयी है।

सन्दर्भ :

1. शोधों पर आधारित लेख
2. भोटिया जनजातियों से साक्षात्कार के आधार पर लेख।

3. विष्ट, बी0 एस0, राजी ए हिमालयन ट्राइव ऑफ इन्डो रेपाल बोर्डर (प्राब्लम एण्ड प्रोसपेक्टस ऑफ ट्राइबल डेवलपमैण्ट), स्टार पब्लिकेशन्स, आगरा, 1991।
4. रायपा, रतन सिंह, शौका, सीमावर्ती जनजाति, रायपा, ब्रादर्स–धारचूला पिथौरागढ़, 1974।
5. जग्गी, ओ0 पी0, फोक मेडिसिन, आत्मा राम एण्ड सन्स, दिल्ली–1973